© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2021

भारतीय अर्थव्यवस्था में परिवहन एवं संचार साधनों का महत्व पर अध्ययन

Gayatri

email : gayatri.jind@gmail.com

सार

परिवहन एवं संचार के साधन भारत की अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। इससे अर्थव्यवस्था को प्रगति की दिशा मिली है। परिवहन के साधन उपलब्ध रहने से कच्चे माल कारखाने तक एवं तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने में आसानी होती है। संचार के माध्यम राष्ट्रीय स्तर से लेकर सामाजिक स्तर तक शांतिपूर्ण माहौल बनाने में सहायक होते हैं। भारत एक विशाल भौगोलिक आकार एवं विविध संस्कृतियों वाला देश है, जिसे परिवहन एवं संचार के साधन एक-दूसरे को जोड़ने का कार्य करते हैं। यही नहीं संचार के साधन सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा उठाने में भी योगदान करते हैं। भारत, पाकिस्तान, नेपाल एवं बंगलादेश के साथ परिवहन संपर्क दो देशों के बीच की सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का सूचक है। परिवहन एवं संचार के बिना किसी भी प्रकार की आर्थिक प्रक्रिया लगभग असंभव है। ये साधन हमारे जैविक पक्ष को प्रभावित करती हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारा जीवन इन्हीं साधनों पर आश्रित है। जीवन जीने के लिए अनाज, शाक-सब्जियों तथा फलों की आपूर्ति में इन्हीं साधनों का सहारा लेना पड़ता है। इसलिए यह स्पष्ट होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में परिवहन एवं संचार के साधन का महत्त्व अत्यधिक है।

मुख्य शब्द : भारतीय, अर्थव्यवस्था, परिवहन, संचार, साधन इत्यादि ।

प्रस्तावना

किसी देश के आर्थिक विकास में परिवहन एवं संचार सेवाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। इन सेवाओं का जितना अधिक विकास होगा उतनी ही अधिक गतिशीलता वहाँ के व्यापार व वाणिज्य में देखने को मिलती है साथ ही वहाँ के लोग भी अधिक क्रियाशील होते हैं। वहाँ के लोगों को तथा व्यापार व वाणिज्य को गतिशील बनाता है।

परिवहन – परिवहन एक ऐसी सेवा या सुविधा है जिससे लोग, विनिर्मित व कच्चा माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है। आधुनिक समाज में वस्तुओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग के लिए द्रुतगामी परिवहन व्यवस्था चाहते हैं। परिवहन में दूरी को कई तरह से मापा जाता है-1. मार्ग की लंबाई के रूप में, 2. मार्ग में लगने वाले समय के रूप में तथा 3. मार्ग पर यात्रा पर आने वाले खर्च के रूप में। परिवहन के साधन के रूप में अनेक विकल्प होते हैं; जैसे-सड़क परिवहन, रेल परिवहन, वायुमार्ग परिवहन, जलमार्ग परिवहन तथा द्रव व गैस के लिए पाइप लाइन परिवहन। लोगों को जितने अधिक विकल्प उपलब्ध होंगे। अर्थव्यवस्था के विकास के लिए उतना ही अच्छा होगा। परिवहन के संदर्भ में दो बिंदु विचारणीय होते हैं

- परिवहन की माँग जनसंख्या के आकार से प्रभावित होती है। अधिक जनसंख्या होने पर अधिक परिवहन सेवाओं की माँग होगी।
- परिवहन का जाल-तंत्र जितना विकसित होगा, अर्थव्यवस्था उतनी ही सुदृढ़ होगी।

संचार – संचार सेवाओं के द्वारा शब्दों, विचारों व संदेशों को चाहे वे लिखित सामग्री के रूप में हैं अथवा शृव्य-दृश्य सामग्री के रूप में, उन्हें विभिन्न माध्यमों जैसे डाक द्वारा, समाचार-पत्र व पत्रिकाओं के द्वारा तथा दूरसंचार सेवाओं (मोबाइल, दूरभाष, फैक्स, इंटरनेट, रेडियो व दूरदर्शन) के द्वारा गंतव्य तक पहुँचाना होता है। ये सभी जनसंचार के आधुनिक साधन हैं। इनका लोगों द्वारा जितना विकास व उपयोग होगी देश आर्थिक रूप से उतना ही प्रगति करेगा।

यातायात के साधनों देश की 'जीवन रेखा'

यातायात के आधुनिक साधन किसी भी राष्ट्र और उसकी अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ हैं। यातायात के विकसित साधनों के माध्यम से पूरी पृथ्वी घर-आँगन सी बन चुकी है। इन साधनों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कम समय में आसानी से पहुँचा जा सकता है। जो दरियाँ तय करने में हफ्तों-महीनों लगते थे। वह अब घंटों में तय हो जाती है। आज पर्वत, पठार, घाटियाँ, वन, सागर-महासागर बाधक नहीं रहे, आसानी से उन्हें पार किया जाता है।

परिवहन के सभी साधनों ने मिलकर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्रांति पैदा कर दी है। परिवहन के साधनों द्वारा उपयोगी वस्तुएँ बाजार तथा उपभोक्ताओं तक शीघ्रता से पहुँचाई जाती है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में अशांति, सूखा, बाढ़ अथवा । महामारी जैसी समस्या का आसानी से मुकाबला किया जा सकता है और तत्काल सहायता पहुँचाने में सक्षम है। यातायात के साधनों के विकास ने देश के विभिन्न भागों के लोगों में भाईचारगी पैदा की है, राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया है और आर्थिक मजबूती प्रदान की है।औद्योगिक विकास मूलतः यातायात के साधनों पर ही निर्भर है। कच्चा माल कारखाने तक लाने और तैयार माल बाजार तक ले जाने में यातायात के साधन ही। सहायक होते हैं।

परिवहन का महत्व

भारत एक विशाल देश है। सामाजिक सम्बद्धता को बढ़ाने, आथिक सम्पन्नता को तेज करने, देश की प्रतिरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सक्षम एवं सघन परिवहन जाल की आवश्यकता होती है।

परिवहन की तीन प्रमुख विधाएँ है-- स्थल, जल और वायु। इन तीनों विधाओं में प्रत्येक है आधारभूत सरचनात्मक विकास के कुछ गुण और दोष हैं। वे एक दूसरे से सदैव प्रतिस्पर्धायुक्त रहते हैं। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इन विधाओं के बीच पारस्परिक एवं परिपूरक संबंध बना रहता है। इसलिए ये सुप्रबंधित एवं एकीकृत परिवहन जाल के रूप में एक संगठित तंत्र का निर्माण करते हैं।

वायु-परिवहन नवीनतम है जबकि स्थल एवं जल परिवहन अनादि काल से प्रचलित हैं। स्थल परिवहन के अन्तर्गत सड़क एवं रेलमार्ग द्वारा आवागमन सम्मिलित किया टिप्पणी जाता है। इन दोनों के बीच रेल परिवहन अपेक्षाकृत अधिक नूतन है। भारी वस्तुओं को लम्बी दूरियों तक ले जाने के किए यह कम लागत का उत्कृष्ट साधन है। यात्रियों को दूर-दूर के स्थानों की यात्रा करने में सबसे कम खर्च मे अधिक प्रभावशाली परिवहन माध्यम है। इसकी तुलना में, सड़क परिवहन छोटी-छोटी दूरियाँ तय करने मे तथा कम दूरी पर स्थित स्थानों में आने-जाने एवं वस्तुओं के परिवहन के लिए सुगम, सस्ता एवं सुविधा युक्त होता है। उचित लागत पर घरेलू काम की चीजों को आप के घर तक पहुँचाने में सड़क परिवहन ही

अपनाया जाता है। जल परिवहन अब यात्रियों के लिए आकर्षण का माध्यम नहीं रहा। परन्तु फिर भी भारी सामानों को परिवहन योग्य नदी मार्गों द्वारा तथा विश्व के अन्य देशों को सामुद्रिक मार्गों द्वारा परिवहन करने का सर्वथा उपयुक्त साधन आज भी है। यद्यपि परिवहन की गति अपेक्षाकृत धीमी है परन्तु यह सबसे सस्ता साधन है। वायु परिवहन आजकल बहुत लोकप्रिय हो चुका है। उन व्यक्तियों को जिन्हें अचानक सूचना प्राप्त होते ही विश्व के अनेक भागों में कार्य सम्पादन करना हो, वायु परिवहन ही एकमात्र विकल्प रहता है। हवाई यात्रा बहुत महँगी होने के बावजूद भी यात्रियों के बहुमूल्य समय एवं शारीरिक ऊर्जा की बचत करता है। आजकल वायु परिवहन द्वारा शीघ्र खराब होने वाले सामान, नाशवान वस्तुओं तथा बहुमूल्य वस्तुओं को विश्व के एक भाग से दूसरे भाग में पहुँचाया जाता है। निजी हवाई कम्पनियों के प्रारम्भ होने के कारण घरेलू या अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानों के किराये में भारी कमी आयी है।

संचार सेवाएँ

जब से मानव पृथ्वी पर अवतरित हुआ है, उसने विभिन्न संचार माध्यमों का प्रयोग किया है। लेकिन आधुनिक समय में बदलाव की गति तीक्र है। संदेश प्राप्तकर्ता या संदेश भेजने वाले के गतिविहीन रहते हुए भी लंबी दूरी का संचार बहुत आसान है। निजी दूरसंचार तथा जनसंचार में दूरदर्शन, रेडियो, समाचार-पत्र समूह, प्रेस तथा सिनेमा, आदि देश के प्रमुख संचार साधन हैं। भारत का डाक-संचार तंत्र विश्व का वृहत्तम है। यह पार्सल, निजी पत्र व्यवहार तथा तार आदि को संचालित करता है। कार्ड व लिफाफा बंद चिट्ठी, पहली श्रेणी की डाक समझी जाती है तथा विभिन्न स्थानों पर वायुयान द्वारा पहुँचाए जाते हें। द्वितीय श्रेणी की डाक में रजिस्टर्ड पेकेट, किताबें, अखबार तथा मैगजीन शामिल हें। ये धरातलीय डाक द्वारा पहुँचाए जाते हैं तथा इनके लिए स्थल व जल परिवहन का प्रयोग किया जाता है। बड़े शहरों व नगरों में डाक-संचार में शीघ्रता हेतु, हाल ही में छः: डाक मार्ग बनाए गए हैं। इन्हें राजधानी मार्ग, मेट्रो चैनल, ग्रीन चेनल, व्यापार चैनल, भारी चैनल तथा दस्तावेज चैनल के नाम से जाना जाता है।

दूर संचार-तंत्र में भारत एशिया महाद्वीप में अग्रणी है। नगरीय क्षेत्रों के अतिरिक्त, भारत के दो तिहाई से

अधिक गाँव एस टी डी दूरभाष सेवा से जुड़ें हैं। सूचनाओं के प्रसार को आधार स्तर से उच्च स्तर तक समृद्ध करने हेतु भारत सरकार ने देश के प्रत्येक गाँव में चौबीस घंटे एस टी डी सुविधा के विशेष प्रबंध किये हैं। पूरे देश भर में एस टी डी की दरों को भी नियमित किया है। यह सब सूचना, संचार व अंतरिक्ष प्रोद्योगिको के समंवित विकास से ही संभव हो पाया है। जन-संचार, मानव को मनोरंजन के साथ बहुत से राष्ट्रीय कार्यक्रमों व नीतियों के विषय में जागरूक करता है। इसमें रेडियो, दूरदर्शन, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, किताबें तथा चलचित्र सम्मिलित हैं। आकाशवाणी (आल इंडिया रेडियो) राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा स्थानीय भाषा में देश के विभिन्न भागों में अनेक वर्गों के व्यक्तियों के लिए विविध कार्यक्रम प्रसारित करता है। दूरदर्शन, देश का राष्ट्रीय समाचार व संदेश माध्यम है तथा विश्व के बृहत्तम संचार-तंत्र में एक है। यह

विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों हेतु मनोरंजक, ज्ञानवर्धक , व खेल-जगत संबंधी कार्यक्रम प्रसारित करता है।

भारत में संचार के प्रमुख साधन

भारत में संचार के साधन डाक सेवा, मोबाइल, इंटरनेट, टेलीफोन सेवा, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा एवं समाचार पत्र हैं।

डाक सेवा- भारत में डाकघरों का जाल संसार में सबसे बड़ा है। इस समय देश में लगभग 1.5 लाख डाकघर हैं। इनकी अधिक संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत है।

तार-टेलीफोन सेवाएँ- भारत में टेलीग्राम की सेवाएँ 1851 में आरंभ हुई और। टेलीफोन की सेवाएँ 1881 में आरंभ की गई। आज देश भर में 38338 टेलीफोन । एक्सचेंज काम कर रही है। भारत का दूरसंचार एशिया में सबसे आगे है। आज श-विदेश से संपर्क में इसका बड़ा योगदान है।

रेडियो टेलीविजन और सिनेमा- ये जनसंचार का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है। जिनसे मनोरंजन के साथ सूचनाओं और समाचारों का प्रसारण होता है। कम्प्यूटर और इंटरनेट की सविधाओं ने संचार में क्रांति उत्पन्न कर दी है। समाचार पत्रों और अन्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से संचार का महत्त्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। पुस्तक ज्ञान और सचना के माध्यम हैं।

उपसंहार

परिवहन एवं संचार साधनों का आर्थिक गतिविधियों के विकास के मध्य सकारात्मक संबंध है। परिवहन के माध्यम से ही हमारी आर्थिक क्रियाएँ सम्पादित होती हैं । परिवहन की महत्ता का वर्णन प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों में भी मिलता है। इनकी महत्ता वर्तमान युग में भी विद्यमान है परन्तु इसके गुण, रूप तथा गति में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया है। परिवहन एवं संचार के साधन प्रादेशिक विकास में सहयोग देते हैं। इससे मनुष्य का आय जनजीवन भी पूर्णरूपेण प्रभावित होता है। पंचायत स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक समाज में शांति का माहौल बनाए रखने में पुलिस एवं सैनिकों के आने - जाने तथा बातचीत करने के लिए परिवहन एवं संचार की आवश्यकता होती है। ये साधन आवश्यक हैं। परन्तु इनके विकास का स्तर संस्कृति के स्तर से निर्धारित होती है। भारत जैसे विशाल भौगोलिक आकार तथा विभिन्न संस्कृतियों वाले देश में परिवहन एवं संचार के विभिन्न साधन एक - दूसरे को जोड़ने का कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त संचार के साधन सामाजिक - सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा - उठाने में भी योगदान देते हैं। भारत का पाकिस्तान , नेपाल तथा बांग्ला देश के साथ परिवहन सम्पर्क दो देशों के बीच की सामाजिक - सांस्कृतिक विकास का सूचक है। परिवहन एवं संचार साधनों के बिना किसी भी प्रकार की आर्थिक क्रिया लगभग असंभव है। देश के अन्दर सामानों को एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्रों में भेजने में परिवहन एवं संचार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मानव परिवहन के साधनों के सहारे देश के किसी भी भाग में जाकर आर्थिक क्रियाएँ सम्पादित कररता है और पुन : अपने निवास स्थान पर वापस चला आता है। संचार सेवा के द्वारा व्यापारिक संबंध कायम किया जाता है। परिवहन एवं संचार के साधन हमारे जैविक पक्ष को भी प्रभावित करते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारा जीवन इन्हीं साधनों पर आश्रित होता है। जीवन जीने के लिए अनाज एवं शाक - सब्जी तथा फलों की आपूर्ति में इन्हीं साधनों का सहारा लेना पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीवास्त ए07एल0 भारत का ड्तिहासा आयरा (1998) प्रष्ठ-293
2. डिलीके जीन दासिपोर्ट एण्ड कम्यूनिकेशन इन इंडिया प्रायर टू. स्टीय लोकोमगोशन भाग-1, दिल्ली (1993)
3. कोसाम्बी डी0डी0 _ द कल्चर एण्ड भिविलाइजेशन ऑफ एनसियन्ट इंडिया : लंदन (2959) प्रष्ठ-62
4. फारकी. ए7के7/एम0 रोड एण्ड कम्यूनिकेशन इन सुगल इण्डिया दिल्ली (1977) प्रृष्ठ-4
5. रॉलिन्सन, एच0जी0 ड्रॉडिया ए शार्ट कल्चरल हिस्टू' लंदन (1955)
6. फ़ारकी एएके7एम0 रोड एण्ड कम्यूनिकेशन इन मुगल ड्रण्डिया' दिल्ली (1977)
7. अलबरुनीज ड्ण्टाया (हएवर्ड सी सचाऊ द्वारा अनुदित) दिल्ली (1994)
8. दत्त, रूद्र एवं के.पी.एम. सुन्दरम (2010) भारतीय अर्थव्यवस्था, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नई दिल्ली।
9. लाल एस.एन. एवं एस.के. लाल (2010) लोक वित्त तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, शिव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
10. लाल एस.एन. एवं एस.के. लाल (2010) भारतीय अर्थव्यवस्था - सर्वेक्षण तथा विश्लेषण, शिवम् पब्लिशर्स, इलाहाबाद।
11. मिश्र एस.के. एवं वी.के. पुरी (2008) भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाउस।